Dr Vandana Suman
Associate Professor
Deptt. of Philosophy
H. D. Jain College, Arrah
M.A. II Sem Philosophy
CC-09 - Indian Linguistic trends

"Meaning and Kinds of Abhava"

वैशेषिक दर्शन के अनुसार निषेध (अभाव) का प्रयोग

वैशेषिक दर्शन के अनुसार अभाव दो प्रकार के होते हैं (1) संसर्गाभाव तथा (2) अन्योन्याभाव। पुनः संसर्गाभाव के चार भेद किये गये हैं प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव तथा सामयिकाभाव। इन भेदों को वंश तालिका द्वारा दिखलाया जा सकता है —

अभाव
- संसर्गाभाव
  - प्रागभाव
  - प्रध्वंसाभाव
  - अत्यन्ताभाव
  - सामयिकाभाव
- अन्योन्याभाव

(1) संसर्गाभाव — दो पदों या वस्तुओं के सम्बन्ध का अभाव है। संसर्ग का तात्पर्य है कि एक वस्तु का उसकी वस्तु में होना। जैसे — कटोरा भी शब्द है। कटोरा और शब्द के बीच संसर्ग का सम्बन्ध है। जब कटोरा से शब्द निकाल लिया जाता है या कटोरे का शब्द समाप्त हो जाता है तब कटोरा और शब्द में कोई सम्बन्ध नहीं रहता अर्थात् इन दोनों में संसर्ग का अभाव हो जाता है। शब्द में विनाश है — यह वाक्य बतलाता है कि शब्द और विनाश में ऐसा संसर्ग या सम्बन्ध

जबतक शब्द है जो कभी समाप्त नहीं होता है, तबतक मे नाश है शब्द के समाप्त होने पर मे नाश भी समाप्त हो जाता है। स्पष्ट है कि संसर्ग दो प्रकार का होता है — संयोग और समवाय। अतः संसर्गाभाव का तात्पर्य संयोग सम्बन्ध का अभाव या समवाय सम्बन्ध का अभाव है। कटोरे में शब्द नहीं है — यह संयोग संसर्गाभाव है। नमक में मिठास नहीं है — यह समवाय संसर्गाभाव है।

(क) प्रागभाव वह है जिसमें कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में नहीं रहता है। दूसरे शब्दों में, कारण में उत्पत्तिपूर्व कार्य का अभाव प्रागभाव है। जैसे — मिट्टी में घड़ा की उत्पत्ति के पूर्व घड़ा का नहीं होना। जबतक मिट्टी से घड़ा नहीं बन जाता है, तबतक मिट्टी में घड़ा का अभाव रहता है। परन्तु घड़ा बन जाने पर इस अभाव का अन्त हो जाता है। किन्तु मिट्टी में घड़ा का अभाव कब से है — यह बतलाना असम्भव है इसलिए प्रागभाव को अनादि और सान्त कहा जाता है। कोई नहीं जानता है कि कारण में कार्य का अभाव कब शुरू हुआ। लेकिन इस अभाव के अन्त को जाना जाता है। यही कारण है कि जन्मभर में कार्य को 'प्रागभाव' प्रध्वंस तक

कहा है — प्रागभाव प्रतिध्वनि कारिम

(3) प्रध्वंसाभाव वह है जिसमें कार्य के विनाश होने पर कार्य का विनाश होना प्रध्वंसाभाव है। जब घड़ा टूट जाता है, टुकड़े में बंट जाता है, तो पुनः उस घड़े का निर्माण नहीं हो सकता। नया घड़ा बन सकता है लेकिन टूटे हुए घड़े को पुनः निर्माण नहीं हो सकता। अतः प्रध्वंसाभाव का अन्त नहीं होता है बल्कि उसकी शुरुआत होती है। तद्रूप है कि प्रध्वंसाभाव आदि और अनन्त है।

(4) अत्यन्ताभाव वह अभाव है जो तीनों कालों में पाया जाता है अतीत, वर्तमान और भविष्य सभी कालों में वह अभाव रहता है। इसलिए इसे "त्रैकालिक अभाव" कहा जाता है। वायु में रंग नहीं है — इस वाक्य में बतलाया गया है कि वायु रंगहीन होता है अर्थात वायु में सदैव रंग का अभाव रहता है। इसलिए इसे अत्यन्त या पूर्ण अभाव कहा जाता है। पूर्ण अभाव होने से वह नित्य होता है। कोई नहीं जानता है कि इस अभाव की शुरुआत कब हुई और इस अभाव का अन्त कब होगा। वस्तुतः यह अनादि और अनन्त है।

(5) सामयिकाभाव वह है जो कुछ समय के लिए होता है। इस अभाव की शुरुआत होती है

और इसका अन्त भी हो जाता है। इसलिए इसे अनादि और सान्त कहा जाता है। जैसे - बेहोशी में चेतना का अभाव। जब व्यक्ति बेहोश हो जाता है, तो उसके चेतना का अभाव हो जाता है। किन्तु जब उसकी बेहोशी समाप्त हो जाती है, अर्थात वह होश में आ जाता है, तो उसमें चेतना वापिस आ जाती है। अतः सामयिकाभाव आदि और सान्त होता है। वह अनित्य होता है। यह वर्तमान कालिक अभाव है।

कतिपय नैयायिकों ने सामयिकाभाव को अभाव नहीं माना है। उनका मानना है कि वह अभाव अत्यन्ताभाव के अन्तर्गत आ जाता है। बेहोशी की अवस्था में चेतना का अभाव कुछ क्षण के लिए होता है परन्तु मृत्यु की अवस्था में चेतना का पूर्ण अभाव होता है। ऐसी स्थिति में चेतना का अभाव सामयिकाभाव होगा या अत्यन्ताभाव - यह विवादास्पद है। वस्तुतः इस प्रश्न का उत्तर विश्वनाथ पंचानन ने "सिद्धान्त मुक्तावली" में "जमीन पर घड़ा नहीं है" के उदाहरण द्वारा दिया है। जमीन पर घड़े का अभाव नित्य है, त्रैकालिक है। यदि

[illegible]

अभाव ... [illegible] ...

निरन्तर है और ... अनादि ... [illegible]

माना है कि ... [illegible] ... नैयायिकों

के सामान्य गुण [illegible] को अनन्ताभाव के

अन्तर्गत रखा है।

(6) अन्योन्याभाव वह है जिसमें दो पदों या वस्तुओं में तादात्म्यता का अभाव होता है। तादात्म्यता का तात्पर्य है अभिन्नता। जैसे "अ ब है" में अ और ब अभिन्न हैं परन्तु "अ ब नहीं है" वाक्य में अ और ब के बीच तादात्म्य का अभाव है। यह अभाव हमेशा रहता है। अतः अन्योन्याभाव भी त्रैकालिक, नित्य, अनादि और अनन्त है। "घट पट नहीं है" वाक्य में बतलाया गया है कि घड़ा और कपड़ा एक नहीं है। इनमें तादात्म्यता का अभाव है जो सदैव रहता है। घड़ा न तो कपड़ा हो सकता है और न ही कपड़ा घड़ा हो सकता है। कतिपय विद्वानों का मानना है कि अन्योन्याभाव और

है। अत्यन्ताभाव को अन्योन्याभाव में या अन्योन्याभाव को अत्यन्ताभाव में परिवर्तित किया जा सकता है। "काशी मथुरा नहीं है" यह अन्योन्याभाव का उदाहरण है। इसे अत्यन्ताभाव में रूपान्तरित किया जा सकता है —

(क) काशी में मथुरा नहीं है।

(ख) मथुरा में काशी नहीं है।

ये दोनों वाक्य अत्यन्ताभाव के हैं। अर्थात अन्योन्याभाव को अत्यन्ताभाव में रूपान्तरित किया गया है।

"वायु में रंग नहीं है" यह अत्यन्ताभाव का उदाहरण है। इसे अन्योन्याभाव में रूपान्तरित किया जा सकता है — "वायु रंग नहीं है" या "रंग वायु नहीं है"। परन्तु अत्यन्ताभाव को अन्योन्याभाव या अन्योन्याभाव को अत्यन्ताभाव में रूपान्तरित करना तर्कसंगत नहीं है। दोनों अभाव के स्वरूप में अन्तर है। अत्यन्ताभाव संसर्गाभाव का एक रूप है जिसका आधार संयोग या समवाय का सम्बन्ध होता है, जबकि अन्योन्याभाव का आधार तादात्म्यता है।